# अंतिम लक्ष कर्मातीत अवस्था

ब्रह्माकुमारीझ

प्रस्तुति

ब्र. कु. प्रफुलचन्द्र



Website: spiritualknowledge.net

# ब्राह्मण जीवन के विविध लक्ष

ब्राह्मण सो फ़रिश्ता

ब्राह्मण सो देवता

ब्राह्मण सो सम्पूर्ण

ब्राह्मण सो बाप समान सम्पन्न

ब्राह्मण सो कर्मातीत

# कर्मातीत अवस्था अर्थात

देहातीत

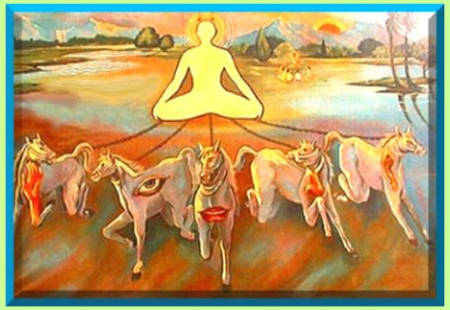

इन्द्रियातीत

विकल्पातीत

विकर्मातीत

विकारातीत

बंधानातीत

# कर्मातीत स्थिति की गुह्य परिभाषा

- कर्मातीत अर्थात कर्म करते हुए कर्मो के बंधन से परे। एक है संबंध दूसरा है बंधन। कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म के संबंध में आना अलग चीज है और कर्म में बंधना अलग चीज हैं।
- कर्म बंधन कर्म के हद के फल के वशीभूत बना देता है, जो स्वयं को भी और दुसरो को भी परेशान करता हैं।
- कर्मातीत अर्थात कर्म के वश होने वाला नहीं लेकिन मालिक बन, अथार्टी बन, कर्मेन्द्रियों के सम्बन्ध में आये, विनाशी कामना से न्यारा हो कर्मेंद्रियो से काम कराये।
- कर्मातीत अर्थात देह, देह के सम्बन्ध, पदार्थ, लौकिक चाहे अलौकिक दोनों संबंध के बंधन से अतीत अर्थात न्यारे।
- कर्मातीत अर्थात अपने पिछले कर्मो के हिसाब-किताब के बंधन से भी मुक्त।

# कर्मातीत श्रेष्ठ आत्माओं की निशानियाँ

❖कर्मातीत श्रेष्ठ आत्मा कभी परेशान नहीं होगी लेकिन अपने अधिकारीपन की शान में रहेगी।

❖ कर्मातीत श्रेष्ठ आत्मा कर्मभोग को कर्मयोग की स्थिति में परिवर्तित कर देगा। वो देह का एवं इन्द्रियो का मालिक होने के कारण कर्मभोग होते हुए भी न्यारा बनने का अभ्यासी होगा और बिमारी के दर्द से भी उपराम रहे कर मुस्कराता रहेगा।

❖ कर्मातीत अवस्थावाला धैर्यवत, सहनशील, अंतर्मुखी और सही परख करने वाला होलीहंस होगा।

❖ कर्मातीत व्यर्थ संकल्पो एवं विकारों की रस्सियों के बंधन से मुक्त होगा।

❖ कर्मातीत सदा प्रशांत और प्रसन्नचित्त रहेगा।

❖ कर्मातीत सर्व शक्तिओं से संपन्न होगा और सही समय पर सही शक्ति का प्रयोग करेगा।

# कर्मातित अवस्था को केसे सिध्ध करे

- स्व के संस्कार ही स्वराज्य को खंडित कर देते है। उसमे भी विशेष रूप से एक तरफ है व्यर्थ सोचना, व्यर्थ सुनना-सुनाना, व्यर्थ बोला चाल में आना, व्यर्थ समय गवाने के संस्कार और दुसरी तरफ है अलबेलेपन और आलस्य के संस्कार जो भिन्न भिन्न रॉयल रुपमे स्वराज्य को खंडित कर देते है। तो इन मायावी संस्कारों से दूर रहो और स्वराज्य अधिकारी बन कर रहो। इन माया की चाल से गभाराओ नहीं हिम्मत से मुकाबला करो।
- बाबा को हमेशां साथ रखो कम्बाइंड रूप का अनुभव इमर्ज रूप में रहे। ऐसे नहीं कि बाप तो है ही मेरे साथ, में तो हु ही बाबा का।
- जब अपने को ओलमाइटी ऑथोरिटी और मास्टर सर्वशक्तिमान समझते हो तो सर्व शक्तिऑ की पावर को इमर्ज करो और अपनी कर्मेन्द्रियों को लो और ओडर में रखने के लिए प्रयोग करो।
- कर्मो की गुह्य गति के ज्ञान के एक एक सूक्ष्म बिंदुओं की गहन समझ कर्मातीत बनने के लिए अत्यंत आवश्यक है। इसीलिए कर्मो की गुह्य गति के ज्ञाता बनो।

# ॐ शांति

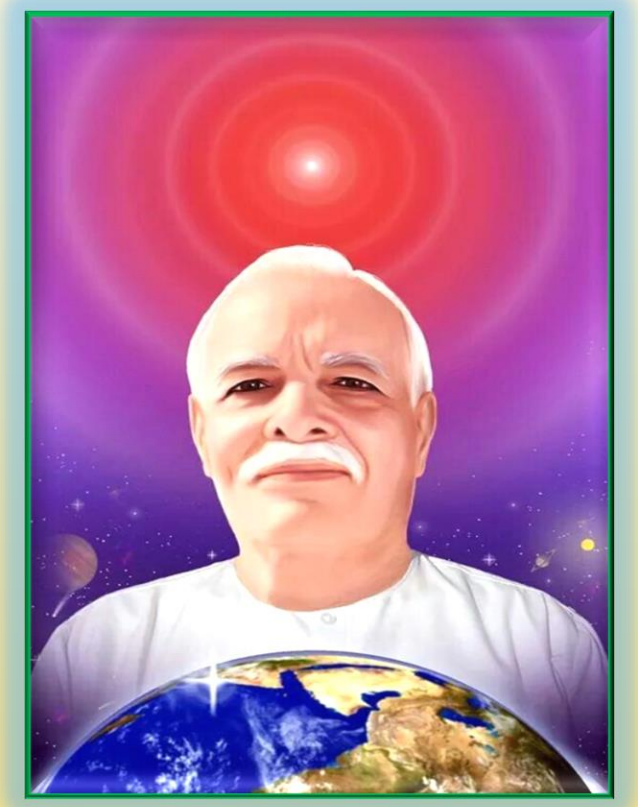

# धन्यवाद